पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन

रेखा श्रीवास्तव

(प्रवक्ता– बी0एड0 विभाग, सी0आर0डी0 आर्य महिला पी0जी0 कालेज, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत)

सुषमा मिश्रा

(सहायक अध्यापिका– प्राथमिक विद्यालय, कुशीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत)

Abstract

Environmental pollution is one of the world's most severe problems. Therefore, there is urgent need to create environmental awareness and to develop knowledge, attitude and skills among all to conserve and nurture our environment. Environmental education has been included in curriculum at every level of education in India for fulfillment of these objectives. Keeping this in view, the present study was conducted on randomly selected 200 B.Ed. trainees from three colleges of Gorakhpur district to study the attitude towards environmental education with reference to their sex, educational qualification and study group. This study revealed that the male B.Ed. trainees, post graduate B.Ed. trainees and science group B.Ed. trainees were having more positive attitude towards environmental education as compared to female B.Ed. trainees, graduate B.Ed. trainees and art group B.Ed. trainees respectively.

Key-words: Attitude, Environmental Education, B.Ed. Trainees

वैज्ञानिक अविष्कारों एंव परीक्षणों ने जहॉ मनुष्य का जीवन स्तर ऊॅचा उठाया है वहीं इसके दुष्परिणाम भी सामने आ रहे है। जनसंख्या वृद्धि के बाद विश्व की दूसरी बड़ी समस्या पर्यावरण प्रदूषण की है। सम्पूर्ण विश्व इस विषय पर चिन्तित है, वैज्ञानिकों ने खतरे की भविष्यवाणी कर दी है। अतः आज हमें इस चुनौती को स्वीकारना होगा तथा लोगों में इसके प्रति चेतना जागृत करनी होगी, उनकी अभिवृत्तियों में परिर्वतन लाना होगा एंव पर्यावरण संरक्षण के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना होगा। यह कार्य सरकार किसी कानून या कार्यक्रम से पूरा नहीं कर सकती है। वरन् इसके लिए शिक्षण संस्थाओं को आगे आना होगा क्योंकि शिक्षण संस्थाएॅ ही वह माध्यम है जो अभिवृत्ति एंव दृष्टिकोणो में परिवर्तन कर सकती है। अतएव शैक्षिक पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को जोड़ा गया है।

पर्यावरण शिक्षा हमें पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक करने के साथ ही वह ज्ञान भी प्रदान करती है जिसकी सहायता से हम इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यूनेस्को ने पर्यावरणीय शिक्षा को एक महत्वपूर्ण विषय मानते हुए कहा है– "पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति, प्रकृति एंव समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को बोध कराते हुए पर्यावरण सुधार हेतु प्रेरणा प्रदान करती है।"

पर्यावरण शिक्षा, शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखती है। सन् 1988–89 में शैक्षिक कार्यक्रमों तथा स्थानीय पर्यावरण परिस्थितियों का विश्लेषण करने के लिए भारत में केन्द्र सरकार ने पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। इस योजना के अन्तर्गत राज्यों, केन्द्रशासित प्रदेशों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं को शत–प्रतिशत आर्थिक सहायता केन्द्र द्वारा प्रदान की जा रही है।

समान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए पुस्तकों, पुस्तिकाओं, पोस्टरों, दृश्य, श्रव्य उपकरणों आदि की कार्य योजनायें निर्मित की गयी है।

विद्यालयों में बालोद्यान का विकास तथा अपने आस–पास की परिस्थितिकीय समस्याओं का अध्ययन भी उसमें शामिल किया गया है। एन0सी0ई0 आर0 टी0 नई दिल्ली द्वारा प्राथमिक एंव माध्यमिक स्तरों पर पर्यावरण सम्बन्धी पाठ निश्चित किये गये है। इसके अतिरिक्त पर्यावरण पर पाठ्य–पुस्तके, पत्र–पात्रिकाये तथा दृश्य सामग्रियॉ निर्मित की गई है। (एन0 सी0 ए0 2005)

उच्च स्तर पर भी पर्यावरण शिक्षा को विभिान्न विषयों में समायोजित करके तथा स्वतंत्र विषय के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। भारतवर्ष के लगभग 20 इन्जीनियरिंग कॉलेजों के अन्तर्गत पर्यावरण शिक्षा का स्नातकोत्तर पाठयक्रम संचालित किया गया है। भारत में पर्यावरण प्रदूषण से उत्पन्न रोगों एवं उनसे बचाव के उपाय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण सरंक्षण कार्यक्रमों की जानकारी प्रारम्भ की गयी है। पर्यावरण संरक्षण के कार्यक्रमों का ज्ञान, प्राकृतिक संसाधनों की समाप्ति का ज्ञान, उनके वैकल्पिक स्रोतों का ज्ञान तथा पर्यावरण का सांस्कृतिक व धार्मिक महत्व आदि प्रकरणों को स्नातकोत्तर स्तर पर शामिल किया गया है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के अन्तर्गत पर्यावरण विज्ञान विद्यालय की स्थापना की गई है, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता प्राप्त है।

पर्यावरण शिक्षा की महत्ता को देखते हुए विभिन्न विश्व विद्यालयों के शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में भी इसे सम्मिलित किया गया है। जिससे शिक्षक प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक हो तथा भविष्य में छात्रों में भी चेतना पैदा करें। यदि शिक्षक में पर्यावरण संरक्षण से सम्बन्धित कौशल, अभिवृत्ति एंव मूल्य विकसित है तो निश्चय ही वह विद्यार्थियों में भी इन गुणों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। तात्पर्य यह है कि शिक्षा द्वारा पर्यावरण सरक्षण हेतु शिक्षकों की इसके प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति आवश्यक है।

इसी सन्दर्भ में शौधकर्त्रीद्वय के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि बी0एड0 प्राशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा के प्रति कैसी अभिवृत्ति रखते है? क्या उनकी सकारात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति लिंग, वर्ग एंव शैक्षिक योगयता से प्रभावित होती है? इसी जिज्ञासा से प्रेरित होते हुए शोधकर्त्रियो ने प्रस्तुत विषय को शोध हेतु चुना ताकि कुछ सार्थक परिणाम प्राप्त किया जा सकें।

अध्ययन उद्देश्य

- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का लिंग के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षाणर्थियों की अभिवृत्ति का शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्राशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति का वर्ग (कला/विज्ञान) के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई है।

- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षणर्थियों की अभिवृत्ति एंव लिंग में .01 विश्वस्नीयता स्तर पर कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्राशिक्षणर्थियो की अभिवृत्ति एंव शैक्षिक योग्यता में .01 विश्वस्नीयता स्तर पर कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।
- पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्राशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति एंव अध्ययन वर्ग (कला/विज्ञान) में .01 विश्वस्नीयता स्तर पर कोई सार्थक सम्बन्ध नही है।

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन गोरखपुर जनपद में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त, यादृच्छिक विधि से चयनित महाविद्यालयों में प्रशिक्षणरत बी0एड0 प्राशिक्षणार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। (गैरेट, 1989)

शोध उपकरण

उपकरण के रूप में शोधकर्त्रीद्वय ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अध्ययन हेतु लिकर्ट पांच बिन्दु मापनी के आधार पर स्वानिर्मित पर्यावरण शिक्षा अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया है। (गुप्ता, 2005)

समष्टि व प्रतिदर्श

इस अध्ययन की समाष्टि में ऐसे सभी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय आते है जो राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षण परिषद द्वारा मान्यता प्राप्त है। किन्तु प्रतिदर्श के रूप में गोरखपुर जनपद स्तर पर यादृच्छिक विधि से चयनित मात्र तीन महाविद्यालयों एंव उनमें प्रशिक्षणरत कुल प्रशिक्षणार्थियों में से मात्र 200 प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संकलन

प्रदत्त संकलन हेतु चयनित प्रतिदर्श को आवश्यक निर्देश देते हुए मापनी का प्रशासन किया गया तथा निश्चित समय के पश्चात मापनी को संकलित करके फलांकन किया गया। फलांकन करते समय अनुकूल कथनों में पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, एंव पूर्णतः असहमत हेत क्रमश 5, 4, 3, 2 एवं 1 अंक प्रदान किये गये। इसी प्रकार प्रतिकूल कथनों में पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत एंव पूर्णतः असहमत के लिए क्रमशः 1, 2, 3, 4 एवं 5 अंक प्रदान किये गये। इस प्रकार प्रदत्तों को संकलित किया गया।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण हेतु अध्ययन उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सम्पूर्ण बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों को लिंग, शैक्षिक योग्यता तथा कला/विज्ञान वर्ग के आधार पर वर्गीकृत किया गया तथा उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये। प्राप्ताकों के विश्लेषण हेतु इनकी अलग–अलग आवृत्ति वितरण तालिका बनाई गई तथा उनका पृथक–पृथक मध्यमान एंव प्रमाणिक विचलन ज्ञात किया गया तथा दो मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉच हेतु क्रान्तिक अनुपात की गणना की गई। गणना से प्राप्त मानों का विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है–

तालिका

विभिन्न आधारें पर वर्गीकृत प्रशिक्षणार्थियों के प्राप्तांको के मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एंव क्रान्तिक अनुपात–

क्रम सं0	आधार	समूह	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
1.	लिंग	छात्राध्यापक	153.3	12.89	5.9
		छात्राध्यापिकायें	141.5	14.7	
2.	शैक्षिक योग्यता	स्नातक	147.06	13.12	
		स्नातकोत्तर	152.1	12.6	2.73
3.	वर्ग	कला	147.8	15.4	
		विज्ञान	152.9	9.55	2.88

परिणामों की व्याख्या

प्रदत्त विश्लेषणोपरान्त जो भी परिणाम प्राप्त हुए उन्हे उपर्युक्त तालिका में प्रदर्शित किया गया है। जिनकी क्रमशः व्याख्या निम्नवत् है–

A - लिंग के आधार पर

लिंग के आधार पर वर्गीकृत प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 153.3 एंव 141.5 प्राप्त हुए है, जो यह प्रदर्शित करते है कि छात्राध्यापक एंव छात्राध्यापिकाओं ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति व्यक्त की है क्योंकि इसके लिए अधिकतम 175 अंक निर्धारित थे इनके सन्दर्भ में उपर्युक्त मध्यमान उच्च धनात्मक अभिवृत्ति स्तर के द्योतक है।

छात्राध्यापकों के प्रमाणिक विचलन एंव मध्यमान का अनुपात 1:12 तथा छात्राध्यापिकाओं के प्रमाणिक विचलन एंव मध्यमान का अनुपात 1:8 है, जो व्यक्तिगत भिन्नता की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

लिंग के आधार पर वर्गीकृत दोनों मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉच उपरान्त क्रान्तिक अनुपात का मान 5.9 प्राप्त हुआ। यह मान विश्वसनीयता के 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर व्यक्त करता है। अतः इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि छात्राध्यापकों ने छात्राध्यापिकाओं की तुलना में पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की है।

B - शैक्षिक योग्यता के आधार पर

शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 152.1 तथा 14.6 प्राप्त हुए तथा इनके प्रमाणिक विचलन क्रमशः 12.6 तथा 13.12 प्रात हुए। उपर्युक्त माध्य स्नातक एंव स्नातकोत्तर प्रशिक्षणार्थियों के पर्यावरण शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति के सूचक है।

स्नातकोत्तर बी0एड0 प्राशिक्षणार्थी समूह के प्रमाणिक विचलन एंव माध्यमान में 1:12 तथा स्नातक बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी समूह के प्रमाणिक विचलन एंव मध्यमान में 1:11 का अनुपात प्राप्त हुआ जो व्यक्तिगत भिन्नता की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत दोनों मध्यमानों के क्रान्तिक अनुपात का मान 2.73 प्राप्त हुआ। यह मान विश्वास के 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर व्यक्त करता है। अतः इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्नातकोत्तर बी0एड0 प्रशिक्षणर्थियों ने स्नातक बी0एड0 प्रशिक्षणर्थियों की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की है।

C- वर्ग (कला/विज्ञान) के आधार पर

अध्ययन वर्ग के आधार पर वर्गीकृत प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 152.9 तथा 147.8 प्राप्त हुए, इनके प्रमाणिक विचलन क्रमशः 9.55 तथा 15.4 प्राप्त हुए। उपर्युक्त माध्य यह प्रदर्शित करते हैं कि कला एंव विज्ञान दोनो ही वर्गो के प्रशिक्षणार्थियों ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति व्यक्त किया है।

कला वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों के मानक विचलन एंव माध्यमान के अनुपात 1:16 तथा विज्ञान वर्ग के मानक विचलन एंव मध्यमान के अनुपात 1:9 प्राप्त हुए, जो व्यक्तिगत भिन्नता की स्थिति को प्रदर्शित करता है।

कला एंव विज्ञान के आधार पर वर्गीकृत दोनों मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता की जॉच उपरान्त प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.88 प्राप्त हुआ यह मान विश्वास के 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर का सूचक है। अतः इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि विज्ञान वर्ग के प्रशिक्षणार्थियों ने कला वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा अधिक धनात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित की है।

निष्कर्ष

प्रदत्त विश्लेषण एंव व्याख्या के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है।

- पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्राध्यापक, छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है। अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एंव लिंग में सार्थक सम्बन्ध है।
- स्नातक बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा स्नातकोत्तर बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति रखते है। अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं शैक्षिक योग्यता में सार्थक सम्बन्ध है।

- कला वर्ग की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियों ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति व्यक्त की है। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण शिक्षा के प्रति बी0एड0 प्रशिक्षणार्थियो की अभिवृत्ति एंव अध्ययन वर्ग (कला/विज्ञान) मे सार्थक सम्बन्ध है।

शैक्षिक निहितार्थ

वैज्ञानिक एंव तकनीकी विकास का परिणाम है कि आज मानव जीवन का प्रत्येक पहलू भौतिक सुख–सुविधाओं से युक्त है किन्तु दूसरी तरफ जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण तथा औद्यौगीकरण की प्रक्रियाएं इस स्तर तक बढ़ गई है कि आज समस्त विश्व के समक्ष यह समस्या उत्पन्न हो गई है कि कही` प्राकृतिक संसाधन समाप्त न हो जाए और आगे आने वाली पीढ़ी इनसे वंचित न हो जाए।

विश्व की सभी राष्ट्रीय एंव अर्न्तराष्ट्रीय संस्थाएं इसकी गम्भीरता का अनुभव करते हुए प्रदूषण नियन्त्रण तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रयासरत है किन्तु इस समस्या का स्थायी समाधान तभी हो सकता है। जब जन–जन जागरूक हो तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हो।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष से दृष्टव्य है कि महिला प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा पुरूष प्रशिक्षणार्थी पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति प्रदर्शित करते है। मानव समाज के विकास में महिलाओं एवं पुरूषों की समान भागीदारी सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे है जिसमें शिक्षा की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यावरण संरक्षण एंव प्रदूषण नियन्त्रण में महिलाएं अहम् भूमिका का निर्वाह कर सकें इसके लिए आवश्यक है कि उन्हे पर्यावरण शिक्षा उपलब्ध कराने के उचित प्रयास किये जाए।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष यह भी बताते है कि स्नातक बी0एड0 प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा स्नातकोत्तर बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी ने पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रदर्शन किया है इससे स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुसार पर्यावरण शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करना चाहिए तथा प्रत्येक स्त्र पर पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य रूप से स्थान प्रदान करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध निष्कर्ष से यह भी परिलक्षित होता है कि विज्ञान वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणार्थी कला वर्ग के बी0एड0 प्रशिक्षणर्थियो की अपेक्षा पर्यावरण शिक्षा के प्रति अधिक सकारात्मक अभिवृत्ति का प्रदर्शन किया है। अतः इसके लिए यह आवश्यक है कि स्नातक एंव स्नातकोत्तर स्तर पर कला वर्ग के पाठ्यक्रम में पर्यावरण शिक्षा को एक अनिवार्य विषय के रूप में सम्मिलित किया जाये। पर्यावरण शिक्षा को केवल विज्ञान विषय के सन्दर्भ मं न रखकर अपितु जन–जन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर सभी वर्गो के लिए पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य कर देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गैरेट, ई0 हेनरी. (1989). **शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग** (ग्यारहवां संस्करण). नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिषर्स, पेज नं0. 242–255
2. गुप्ता, एस0 पी0. (2005). **सांख्यिकीय विधियां** (संषोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण). इलाहाबाद : षारदा पुस्तक भवन, पेज नं0.74 एवं 111–113
3. एन. सी. एफ. (2005), **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा**, एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 (नई दिल्ली)

◆